भारतीय नगरों की आकारिकी

- पारंपरिक प्रतिरूप
- दुर्ग प्रतिरूप
- औपनिवेशिक प्रतिरूप
- Camp
- नगर का नियोजित विकास
  - Sector के रूप में

अधिवास के प्रतिरूप

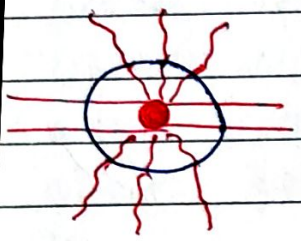

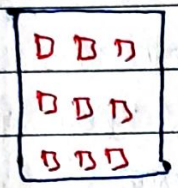

- गृहों की सघनता
  - → एक/दो मंजिले / बहुमंजिले इमारतें
- सड़क मार्ग के प्रतिरूप
  - → संकड़ी / चौड़ी
  - → नियोजित / अनियोजित
- आर्थिक क्रियाएं
  - → उद्योग
  - → खुदरा व्यापार
  - → थोक व्यापार
- आवासीय क्षेत्र
  - भूमि का उपयोग
    - रहने के लिए
    - व्यापार के लिए
- जनांकिकीय
  - → जनसंख्या घनत्व
    - औसत से अधिक
    - औसत से कम
- संस्कृति
  - ग्रामीण
  - शहरी

नियोजित विकास
↓
नवीन शहरों का विकास
↓
प्रखंड मॉडल

→ भारत में नगरीकरण का इतिहास अत्यंत प्राचीन होने के कारण यहां पारंपरिक नगरीय आकारिकी से लेकर औपनिवेशिक और नवीन नियोजित प्रतिरूप का विकास होने के कारण अधिकांश शहरों में मिश्रित प्रतिरूप से संबंधित विशेषताएं देखने को मिलती है। यहां आवासीय क्षेत्र में भूमि का उपयोग रहने के साथ व्यापार के लिए भी किया जाता है। सड़क मार्ग के समीप जहां भूमि की कीमत अधिक होती है वहां घरों का निर्माण सामान्यतः व्यापार के उद्देश्य से किया जाता है।

विकसित देशों में नगर के केन्द्र के समीप संक्रमण क्षेत्र में जहां निम्न आय वर्ग के लोग निवास करते है वहीं भारत में नगर के केन्द्र में नगर से संबंधित बेहतर सुविधाओं के उपलब्ध होने के कारण उच्च आय वर्ग के लोगों के घरों की संख्या अधिक होती है।

नगर के केन्द्र के समीप जहां औसत से अधिक जनसंख्या घनत्व होती है वहीं सांस्कृतिक विविधता के साथ शहरी संस्कृति की प्रधानता होती है जबकि केन्द्र से दूर जाने पर जनसंख्या घनत्व के साथ घरों के सघनता में भी कमी आती है। नगर के उपांत में ग्रामीण & शहरी संस्कृति से संबंधित विशेषताएं एक साथ देखने को मिलती है वहीं नगर के बाह्य क्षेत्र में न केवल जनसंख्या घनत्व कम होता है बल्कि ग्रामीण संस्कृति की प्रधानता होती है।

इस प्रकार भारत के अधिकांश प्राचीन शहरों में अत्यधिक नगरीकरण के कारण न केवल जनांकिकीय, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए बल्कि नगर का अनियोजित विकास होने के कारण बहुनाभिकीय मिश्रित प्रतिरूप से संबंधित विशेषताएं देखने को मिलती है जो विकसित देशों के नगरों की आकारिकी से एकदम भिन्न है।

नगरीय बस्तियों का पदानुक्रमिक संबंध

- प्रमुख नगर की संकल्पना
- कोटि आकार नियम (Rank Size Rule)
- केन्द्रीय स्थल सिद्धांत
- विचियाँ → विलयन

प्रमुख नगर की संकल्पना

→ परिभाषा
→ प्रमुखता को निर्धारित करने वाले कारक
→ प्रमुखता में विचलन के कारण
→ निष्कर्ष

जैफरसन

को स्पष्ट करते हुए नगरीय बस्तियों के पदानुक्रमिक संबंध के संदर्भ में यह विचार व्यक्त किया कि जब अत्यधिक नगरीकरण के कारण किसी नगर का विकास अन्य नगरों के अपेक्षा अधिक हो जाता है तब सर्वोच्च कोटि के नगर को ही प्रमुख / प्रधान नगर कहते हैं। इस प्रकार के नगर में अभिकेन्द्रीय बल के प्रभावशाली होने के कारण अन्य क्षेत्रों में रहनेवाले बुद्धिजीवी, पूंजीपति, व्यापारी, उद्योगपति और कलाकारों का पलायन होने के कारण नगर में विकास की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिलता है जिससे अन्य नगरों का विकास बाधित होने लगता है।

प्रमुख नगरों का विकास विकासशील, विकसित या पिछड़े देशों में विश्व के दोनों गोलार्द्ध में हुआ है जहां देश का आकार छोटा होता है या कृषि पर आधारित निर्वाह अर्थव्यवस्था की प्रधानता होती है वहां आर्थिक क्रियाओं के केन्द्रीकरण के कारण किसी एक नगर का विकास प्रमुख नगर के रूप में हो जाता है जो उस देश की राजधानी, औद्योगिक केन्द्र के साथ परिवहन का मुख्य केन्द्र बन जाता है।

यहां तक की विकसित देशों में भी नगरीकरण का इतिहास नवीन होने पर या सांस्कृतिक विशेषताओं में समरूपता होने पर भी किसी एक नगर का विकास अन्य नगरों की अपेक्षा अधिक होने से प्रमुख नगरों की श्रेणी रूप होती है।